

पाठ 8 अध्याय 6

हालाँकि हम इसके बारे में पहले ही बात कर चुके हैं, व्यवस्थाविवरण अध्याय 6 का ध्यान इस पर केंद्रित है, पद 4–9 और विशेषकर पद 4 और 5। पद 4 और 5 को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है यहोवा की आराधना में आस्था के कारण इसे एक अलग शीर्षक दिया गया है: **शेमा**।

शेमा का एक और नाम भी है: **हे इस्राएल, सुन**। यह शेमा के मूल में बहुत ही मौलिक है। संपूर्ण तोरह (और ईसाई सिद्धांतों के लिए) शेमा है कि हम इसे बारीकी से आज जाँचने जा रहे हैं और उन लोगों के लिए जो (गलत तरीके से) कहते हैं कि यीशु मसीह खुद को और अपने लोगों को दूर करने के लिए आए थे। तोरह के अनुयायी (इसके विपरीत मत्ती 5:17–19 में उनके जोरदार कथन के बावजूद), मरकुस के सुसमाचार से इस अंश को सुनें (जो अन्य समकालिक सुसमाचारों में भी मौजूद है), **मरकुस 12: 28–30, मरकुस 12:28 और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना। और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छा उत्तर दिया है, उस से पूछा, कि कौन सी आज्ञा सब से बड़ा कौन है?** 29 यीशु ने उत्तर दिया, “सबसे पहली बात यह है, ‘हे इस्राएल, सुनो! हमारा प्रभु यहोवा तेरे लिये है! परमेश्वर एक ही प्रभु है, वह 30 और तू यहोवा अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना; आपकी आत्मा, आपकी सारी बुद्धि और आपकी सारी शक्ति के साथ आपका पालन करता है।’

अब व्यवस्थाविवरण 6: 4–5 को सुनिए: व्यवस्थाविवरण 16:4 “हे इस्राएल सुन! यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, तथा अपनी सारी शक्ति से प्रेम कर।

यीशु बेशक शेमा का हवाला दे रहे थे, वह तोरह का हवाला दे रहे थे। लेकिन ज्यादातर लोगों की बात सुनने के लिए आज इवेंजेलिकल चर्च के नेता सोचेंगे कि यीशु ने जो कुछ किया वह मूलतः यही था कि, “जो कुछ भी तुम जानते थे उसे फेंक दो, मैं तुम्हें बिलकुल नए कानून और आदेश देने जा रहा हूँ जो पहले आए सभी की जगह लेगा। आगे ध्यान दें कि यीशु ने अपने नाम से “इस्राएल” शब्द को भी नहीं हटाया है। इस कथन को न तो वह “चर्च” से बदलता है। मेरे ख्याल से आमतौर पर जब हमसे पूछा कि सबसे बड़ी आज्ञा क्या है, तो हमने उसे जानने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त किया है, इसलिए हम तुरंत जवाब दें “अपने पूरे दिल, दिमाग और ताकत से प्रभु से प्यार करो। चूँकि हम मसीहा का हवाला दे रहे हैं, तो ऐसा क्यों है कि जानबूझकर उसे गलत तरीके से उद्धृत करते हैं? लेकिन मसीहा को उद्धृत करते समय हम जानबूझकर उनका गलत उद्धरण क्यों देते हैं? हम क्यों उद्धृत करना शुरू करते हैं उस कथन के बीच में? हम इसके पहले वाले “हे इस्राएल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है” को क्यों छोड़ देते हैं ईश्वर, प्रभु एक है” जो इससे पहले आता है? इसलिए, गैर-यहूदी ईसाई, अगर हम यह कहने जा रहे हैं कि कुछ आदेश इस्राएल के लिए हैं, और ये उन आदेशों से अलग हैं जो इस्राएल के लिए हैं। “चर्च” के लिए, फिर 10 आज्ञाओं को निपटाने के साथ (जो दी गई थीं इस्राएल को कानून का हिस्सा मानना) बौद्धिक ईमानदारी हमें इस तोरह को भी बाहर

फेंकने के लिए मजबूर करती है यीशु की ओर से परमेश्वर से इस्राएल के परमेश्वर के रूप में प्रेम करने की आज्ञा।

बस इसलिए कि मेरी बात गलत न समझी जाए मैं जोर देकर कह रहा हूँ कि इस्राएल और चर्च के लिए अलग-अलग आदेश और सुसमाचार नहीं हैं और बेशक 10 आज्ञाएँ और शेमा चर्च के लिए हैं जैसे कि वे इस्राएल के लिए हैं। मैं यह भी कह रहा हूँ कि यह दिल तोड़ने वाला और क्रोधित करने वाला है कि इतनी शताब्दियों से संस्थागत ईसाई धर्म ने तोरह के उन्मूलन की झूठी घोषणा करना चुना है, माना जाता है कि इसे यीशु द्वारा इब्रानी विश्वास से पूरी तरह अलग एक नए धर्म की स्थापना से प्रतिस्थापित किया जाना है; एक ऐसा धर्म जो गैर-यहूदियों द्वारा, गैर-यहूदियों के लिए और गैर-यहूदियों के लिए है। हमें एक टेढ़े रास्ते पर ले जाया गया है (और हमने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया है), और उस स्वीकृति का परिणाम झूठे सिद्धांतों की एक पूरी श्रृंखला का अधिनियमन है जिसके कारण धर्मयुद्ध, धर्माधिकरण, धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद की पुनः स्थापना और नरसंहार हुआ है। और अब हमारे समय में हमारा प्रिय चर्च शक्तिहीन, आत्म अवशोषित और समृद्धि उन्मुख हो गया है, जबकि यह इस्राएल के भविष्यसूचक पुनर्जन्म और यरूशलेम के इब्रानियों के नियंत्रण में वापस आने के प्रभाव को अनदेखा करता है। हमने देखा है कि ईसाई संस्था आउटसोर्ट मंत्रालय, एक कमजोर लेकिन विविधतापूर्ण सहिष्णु सुसमाचार, एक यीशु जो पिता से अलग है, पाप और बुराई का इनकार, और मूर्तिपूजक छुट्टियों का पालन करते हुए उन लोगों की अनदेखी करती है जिन्हें स्वयं प्रभु ने पवित्र घोषित किया है।

शेमा को परमेश्वर के लोगों के लिए, परमेश्वर के सभी लोगों के लिए एक जागृत करने वाली पुकार होना चाहिए।

आइये हम सब मिलकर व्यवस्थाविवरण के इस अत्यंत गहन छठे अध्याय को पढ़ें, जो तोरह के पिघले हुए मूल, शेमा को उजागर करता है, जो परमेश्वर के वचन को उसी प्रकार शक्ति प्रदान करता है, जिस प्रकार हमारे ग्रह का पिघला हुआ मूल पृथ्वी की महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को शक्ति प्रदान करता है।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 6 पूरा पढ़ें

अध्याय 1 से 5 तक मूसा इस बिंदु तक पहुँचता है: माउंट सिनाई से यहोवा द्वारा इस्राएल को दिए गए नियमों और आदेशों का पुनर्कथन (शायद पुनः परिचय भी)। मैं इस बात पर पर्याप्त जोर नहीं दे सकता कि मूसा द्वारा इन नियमों को दोहराने का कारण जो पहले से ही इस्राएल को लगभग 40 साल पहले दिए जा चुके हैं, यह है कि उन्हें इब्रानियों की एक पूरी नई पीढ़ी के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है, जिन्हें स्पष्ट रूप से उनके माता-पिता द्वारा ये नियम नहीं सिखाए गए थे, जो कि पलायन की पहली पीढ़ी (सभी मर चुके हैं और रेगिस्तान की रेत में दफन हैं)। इसके अलावा, वह इसे उस समूह को दे रहा है जो वह करने वाला है जिसे उनके माता-पिता ने करने से मना कर दिया था: कनान की भूमि पर विजय प्राप्त करना। ये लोग एक

दीर्घकालिक युद्ध (एक पवित्र युद्ध) में प्रवेश करने से बस कुछ ही दिन दूर हैं, जिसमें उनमें से हजारों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ेगी।

मूसा ने पुष्टि की कि वह उन्हें जो सिखाने जा रहा है, वह बिल्कुल वही है जो प्रभु ने उसे पहली बार इस्राएल को देने के लिए कहा था, न ज्यादा और न ही कम, और यह कि जब वे वादा किए गए देश में प्रवेश करते हैं तो इन नियमों और नियमों का ईमानदारी से पालन किया जाना चाहिए। इस्राएल को तोरह का पालन करने की आवश्यकता इसलिए है ताकि इस्राएल के साथ सब कुछ ठीक रहे और प्रभु ने उनके लिए जो भी आशीर्वाद तैयार किए हैं, वे साकार हों। पद 3 का अंतिम भाग दो विचारों को एक साथ लाता है: पहला, कनान में उनके लिए जो तैयार किया जा रहा है वह केवल जीवित रहने से कहीं अधिक है, यह भरपूर जीवन है।

यही इस वाक्यांश का अर्थ है, "दूध और शहद से बहने वाली भूमि"। दूसरा, इस्राएल को याद दिलाया जाता है कि जो होने वाला है (अपनी खुद की भूमि की विरासत) वह "उनके पूर्वजों" को दिए गए वादे (अब्राहमिक वाचा) की पूर्ति है, जिसका अर्थ है कुलपिता अब्राहम, इसहाक और याकूब। ध्यान दें कि 40 साल पहले माउंट सिनाई पर स्थापित वाचा ने इस्राएल के मिश्र छोड़ने से 600 साल पहले अब्राहम को दी गई वाचा को खत्म नहीं किया और न ही प्रतिस्थापित किया।

बल्कि मूसा की यह वाचा दूसरे उद्देश्य के लिए है, यह छुड़ाए हुए जीवन को जीने के लिए नियमों और मानकों को निर्धारित करना है जिसका आनन्द उस देश में लिया जाएगा जिसका वादा पहली वाचा में किया गया था।

तो यहाँ, मोआब की तलहटी पर खड़े होकर, मूसा पहाड़ी उपदेश का मूल संस्करण देता है जिसे मसीहा 1300 साल बाद दोहराएगा। इस प्रकार मूसा केवल व्यवस्था को दोहराने वाला नहीं है, बल्कि वह इस पर व्याख्या करने वाला है और इन कालातीत आदेशों के पीछे अंतर्निहित सिद्धांतों (आत्मा) को स्पष्ट करने के लिए वह सब कुछ करने जा रहा है जो वह कर सकता है।

नहीं, जब मैंने यीशु के पहाड़ी उपदेश की तुलना व्यवस्थाविवरण में जो हम पढ़ रहे हैं उससे की तो मैं लाक्षणिक रूप से नहीं बोल रहा था या अतिशयोक्ति नहीं कर रहा था, समानताएँ बहुत गहरी हैं और मुझे लगता है कि समय बीतने के साथ आप देखेंगे कि यह मामला है। यीशु केवल अपने पूर्ववर्ती मूसा द्वारा निर्धारित पैटर्न को अपना रहे थे। ध्यान दें कि मूसा ने पहले ही (एक अध्याय पहले, अध्याय 5 में) व्यवस्था का वर्णन करना शुरू कर दिया है। वास्तव में लोगों को उसका संबोधन, वास्तव में अध्याय 1 में ही शुरू हो गया था। इसलिए, व्यवस्थाओं को फिर से देने के पहले ही वह उस सर्वव्यापी सिद्धांत को निर्धारित करने के लिए रुकता है जिसके इर्द-गिर्द सारी व्यवस्था टिकी हुई है, और यह सिद्धांत "शेमा" शीर्षक वाला है। ऐसा क्यों किया गया? इस बिंदु पर इस आध्यात्मिक सिद्धांत को क्यों रोका और शामिल किया गया? यदि यह ऐसा कुछ है जिस पर मूसा ने पहले से ही सब कुछ सिखाया है, तो इसे बिल्कुल शुरुआत में देने के बजाय अपने उपदेश के बीच में देने का इंतज़ार क्यों किया गया? सरल: मूसा नहीं चाहता था कि लोग उसके द्वारा पहले से दिए

गए नियमों को इस संदर्भ में गलत तरीके से देखें कि यह निश्चित रूप से ऐसा लग सकता है कि वे केवल एक सर्वशक्तिमान स्वर्गीय शासक द्वारा उनके सिर पर धोपे जा रहे सख्त कानूनी नियमों का एक सेट हैं। उस युग में हर समाज का एक कानूनी कोड होता था जिसे राजा अपरिवर्तनीय मानता था, और साथ ही इन राजाओं के पास लोगों को कानूनों के कारणों को समझाने का कोई दायित्व या रुचि नहीं थी क्योंकि अक्सर वे कानून राजघराने के लाभ के लिए स्वार्थी होते थे। निहितार्थ यह है कि ये कानून हैं, और आपको यह जानने की आवश्यकता नहीं है कि क्यों, बस उन्हें करें या फिर। लेकिन परमेश्वर के तोरह के साथ ऐसा नहीं था।

चूँकि मूसा ने नई पीढ़ी के साथ कई नियमों (10 आज्ञाओं) पर फिर से विचार किया था और कई और नियम अभी भी आने बाकी थे, इसलिए परमेश्वर (मूसा के माध्यम से) कहते हैं, “मेरे लोगों, एक पल रुको, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम गलत विचार रखो। यहाँ वह संदर्भ है जिसके भीतर तुम्हें मेरे सभी नियमों को समझना और उनका पालन **करना** है”। फिर मूसा आगे बताता है (जिसे अंततः शेमा कहा गया) कि इस्राएल का प्रभु के प्रति प्रेम व्यवस्था का पालन करने के लिए आवश्यक संदर्भ है। यह व्यवस्था ही है जो यहोवा और इस्राएल के बीच संबंधों की शर्तों को स्थापित करती है। यहोवा के प्रति इस्राएल की आज्ञाकारिता का स्रोत बंजर और निर्दयी कानूनवाद से उत्पन्न होना नहीं था, बल्कि यह प्रेम की प्रतिक्रिया से आगे बढ़ना था। अब कृपया इसे सुनें: प्रभु कहते हैं कि उनके प्रति आज्ञाकारिता प्रेम की प्रतिक्रिया है जैसा कि वे इसे परिभाषित करते हैं। उनसे प्रेम करना उनके प्रति आज्ञाकारी होना है।

आज पश्चिमी चर्च का कहना है कि (आम तौर पर) आज्ञाकारिता और प्रेम पूरी तरह से अलग-अलग चीजें हैं और शायद कुछ हद तक परस्पर अनन्य भी हैं। वास्तव में यह आमतौर पर निहित है कि यहोवा के साथ हमारे रिश्ते के संबंध में आज्ञाकारिता की तुलना में प्रेम बेहतर है। हालाँकि पवित्र शास्त्रों में परमेश्वर कहता है कि एक दूसरे का प्रमाण है। परमेश्वर कहता है कि उसके प्रति आज्ञाकारिता उससे प्रेम करने का कार्य है, और उससे प्रेम करना उसके प्रति हमारी आज्ञाकारिता में सन्निहित है, जितना हम चाहें, हम आज्ञाकारिता को प्रेम से अलग नहीं कर सकते क्योंकि इसमें परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा और उसके साथ संबंध शामिल है।

आप देखिए कि ग्रीको-रोमन काल से ही प्रेम की अवधारणा मुख्य रूप से एक क्रिया होने से हटकर मुख्य रूप से एक भावना, आंतरिक गर्मी की अनुभूति बन गई है। बाइबल के इब्रानियों ने कभी भी प्रेम के आधुनिक धर्मनिरपेक्ष और ईसाई दृष्टिकोण को दूसरे के प्रति करुणा या स्नेह की एक गर्म, कोमल भावना के रूप में नहीं पहचाना होगा। मैं वेबस्टर के न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी में गया और उन्होंने प्रेम शब्द के लिए जो 9 अलग-अलग परिभाषाएँ दीं, उनमें से हर एक ने भावना और केवल भावना की बात की। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं: कोमल भावनाएँ, स्नेह, यौन जुनून, भाईचारे की भावना और एक मजबूत पसंद। लेकिन इब्रानी (और परमेश्वर) के लिए प्रेम एक बाहरी प्रतिक्रिया, एक क्रिया की माँग करता है, या यह प्रेम नहीं था।

प्रभु कहते हैं, 'यह मत कहो कि तुम मुझसे प्रेम करते हो और फिर पलटकर मेरी आज्ञाओं से इन्कार करो, क्योंकि मैं कहता हूँ कि यदि तुम मेरी आज्ञाओं से इन्कार करते हो तो तुम मुझसे प्रेम नहीं करते।'।

आइए एक पल के लिए अपना ध्यान नए नियम के (ईसाइयों के लिए) अधिक परिचित पहाड़ी उपदेश पर लगाएँ। मत्ती 5 इस महत्वपूर्ण शिक्षा की शुरुआत करता है जो ईसाई धर्म के मूल में है। यह इस बात की व्याख्या करके शुरू होता है कि यीशु खुद को एक पहाड़ी की चोटी पर खड़ा करता है जहाँ से वह सिखाना शुरू करता है। और उनकी शानदार शिक्षाओं में से पहली कुछ शिक्षाएँ हैं जिन्हें ईसाई धर्म ने आनंदमय कहा है। यीशु इस उपदेश की शुरुआत स्वर्गीय तथ्यों के कई सकारात्मक कथनों को सूचीबद्ध करके करते हैं जो (बेशक) हमेशा से ही ऐसे रहे हैं, लेकिन (हाल ही में) धार्मिक नेतृत्व द्वारा दबा दिए गए थे। ये स्वर्गीय तथ्य मनुष्यों के निर्णयों और दर्शन के दलदल में इतने खो गए थे कि वे लगभग भूल गए थे। यीशु कहते हैं, आत्मा में गरीब धन्य हैं, क्योंकि वे स्वर्ग के राज्य को देखेंगे, धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सांत्वना दी जाएगी। इनमें से कई और महत्वपूर्ण स्वर्गीय तथ्य सूचीबद्ध हैं और फिर वह कहते हैं, "धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें"।

वह आगे बढ़कर लोगों से कहता है: "तुम पृथ्वी के नमक हो; तुम संसार के लिए प्रकाश हो।" फिर अचानक, जब वह अपने उपदेश में गहराई से डूबा हुआ था, यीशु मध्यस्थ, दूसरे मूसा (यदि आप चाहें) अचानक एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप करने के लिए रुक गए। जिस तरह मूसा ने अपने उपदेश को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसके श्रोता जो कुछ भी कह रहे थे उसे गलत संदर्भ में न लें (जैसा कि हम सभी करने के लिए लुभाए जाते हैं), यीशु अनिवार्य रूप से कहते हैं, "एक सेकंड रुकें क्योंकि मैं नहीं चाहता कि आप गलत विचार लें। यहाँ वह संदर्भ है जिसके भीतर आपको समझना है कि मैं आपको क्या सिखा रहा हूँ"। और फिर यीशुआ कहते हैं (पद 17 से शुरू करते हुए):

मत्ती 5:17 " यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूँ। नष्ट करने नहीं, परन्तु पूर्ण करने आया हूँ क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, व्यवस्था में से एक मात्रा या बिन्दु भी, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए, नहीं टलेगा। इसलिए जो भी इन छोटी से छोटी आज्ञाओं को तोड़ेगा और ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देगा, वह परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो उनका पालन करेगा और दूसरों को भी सिखाएगा, वह परमेश्वर के राज्य में महान कहलाएगा।

इस नाटकीय और व्यापक कथन को कहने के बाद ताकि हर श्रोता यह न सोचे कि उसने मूसा के कानून को एक नए कानून के लिए त्याग दिया है, या उसने यह घोषणा नहीं की है कि मूसा अब प्रासंगिक नहीं है, मसीहा अपना उपदेश जारी रखता है। और मत्ती 5:21 में वह शुरू करता है, "तुमने सुना है कि पूर्वजों को बताया गया था, और फिर व्यवस्था के कई बुनियादी सिद्धांतों को सूचीबद्ध करता है। उन सिद्धांतों में से

प्रत्येक के भीतर यीशु उनके अर्थ की व्याख्या करता है। क्यों? क्योंकि जिस प्रकार विचारहीन भौतिक अनुष्ठान ने परमेश्वर के प्रेम पर आधारित आत्मा से परिपूर्ण आज्ञाकारिता का स्थान ले लिया था, उसी प्रकार मनुष्य के दर्शन ने परमेश्वर की आज्ञाओं के अर्थ और उद्देश्य को पूरी तरह से भ्रष्ट कर दिया था।

और क्या आप यह नहीं जानते: हमारे मसीहा की चेतावनी के बावजूद, जिस तरह इस्राएली समाज धीरे-धीरे यहोवा के प्रति अपने प्रेम को भूल गया था और अनुग्रह और दया को समाप्त कर दिया था जो व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार था, उसी तरह यीशु के अनुयायी धीरे धीरे उसके प्रति अपने प्रेम को भूल गए हैं और अपने आचरण और आराधना से आज्ञाकारिता को समाप्त कर दिया है। हमने वही किया है जो उसने हमें न करने के लिए कहा था। हमने उसकी सेवकाई के ठीक उसी संदर्भ को अपनाया है जिसे उसने हमें न स्वीकार करने के लिए कहा था। जिस प्रकार इस्राएल के अधिकांश लोग अपने विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में नियमों का यांत्रिक अनुसरण करने लगे, उसी प्रकार चर्च के अधिकांश लोग भी अपने विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में भावनाओं के प्रदर्शन और चर्च की पूजा पद्धति का यांत्रिक अनुसरण करने लगे हैं।

दोनों ही तरीकों में अक्सर वह तत्व नहीं होता जो किसी भी अर्थ या प्रासंगिकता के लिए आवश्यक है: प्रभु के प्रति प्रेम, जो हमारी आज्ञाकारिता से प्रमाणित होता है।

व्यवस्थाविवरण 6:4 कहता है, "हे इस्राएल सुन। यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एकाद है (प्रभु एक है)"। इब्रानी में "सुनना" **शेमा** है। इसका मतलब निष्क्रिय सुनना नहीं है जैसे कि सीडी बजाना और चुपचाप संगीत का आनंद लेना। न ही इसका मतलब सूचना या ज्ञान के स्रोत के रूप में सुसमाचार या भजन पढ़ना है। **शेमा** कार्रवाई करने का निर्देश है। शेमा का अर्थ है सुनना और पालन करना, परमेश्वर के निर्देश को सुनना और उसे करना! इसके बाद यह कहा गया है कि, "याहवे" हमारा परमेश्वर है, और "याहवे" एक है"। यहूदी संतों के बीच इस बात को लेकर कुछ मामूली मतभेद हैं कि वास्तव में "याहवे" एक है" का मतलब हमें क्या संकेत देना चाहिए।

कुछ रब्बियों का मानना है कि यह कथन इस क्रांतिकारी धारणा को स्पष्ट करने का एक और तरीका मात्र है कि सभी अस्तित्व में केवल एक ईश्वर है। अन्य मानते हैं कि यह ईश्वर की आत्म एकता, एकता की प्रकृति की बात कर रहा है, अर्थात्, वह उस युग के अन्य देवताओं की तरह नहीं है जो खुद को विभाजित करने और विभिन्न स्थानों और मंदिरों से जुड़े होने की प्रवृत्ति रखते थे। फिर भी अन्य कहते हैं कि यह "याहवे" और इस्राएल के बीच उचित संबंध की अभिव्यक्ति है; कि याहवे इस्राएल का एकमात्र ईश्वर है और उन्हें दूसरों की ओर नहीं देखना चाहिए। खैर, मेरी राय में, यह साहित्यिक आलोचना नामक अकादमिक अनुशासन की कमज़ोरी है जो हर वाक्य को अलग-अलग करके वैज्ञानिक रूप से निर्धारित करता है कि हमें इसे कैसे लेना चाहिए। आस्था और आध्यात्मिकता को छोड़ दिया जाता है, और चूँकि बाइबल विश्वास और आध्यात्मिकता पर आधारित एक दस्तावेज है, इसलिए यह मुद्दा खो सकता है।

जब मैं " याहवे एलोहिनु " याहवे " ईचड इन शब्दों को देता हूँ यहोवा हमारा ईश्वर है, यहोवा एक है) तो मुझे एक विशाल ईश्वर-सिद्धांत दिखाई देता है जो एक सार्वभौमिक **आध्यात्मिक** वास्तविकता को व्यक्त करता है, इसलिए इसके सार को समझने के लिए भी कई मानवीय अभिव्यक्तियों की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, उदाहरण के लिए, अगर हम दूर की आकाशगंगा में किसी विदेशी ग्रह पर जाते हैं और वहाँ के निवासी हमसे पूछते हैं कि हम कहाँ से आए हैं तो हम कहेंगे, यह स्थान पृथ्वी है। फिर वे पूछ सकते हैं, पृथ्वी क्या है? हम पृथ्वी की विशेषताओं की एक पूरी सूची के साथ जवाब देंगे यह गोल है, यह एक तारे के चारों ओर घूमती है, जलवायु समशीतोष्ण है, यह ज्यादातर पानी है लेकिन बहुत सारी सूखी जमीन भी है, इत्यादि।

अब अगर यह कोई विदेशी साहित्यिक आलोचक होता जिससे हम बात कर रहे थे तो वह जवाब दे सकता था, "अच्छा यह कौन सा है? क्या यह गोल है, या इसमें बहुत पानी है, या जलवायु समशीतोष्ण है?" साहित्यिक आलोचक इसी तरह काम करते हैं, किसी भी कथन के लिए जटिल और बहुआयामी अर्थों के लिए बहुत जगह नहीं है। बेशक हमारे विदेशी साहित्यिक आलोचक को हमारा जवाब शायद यह होगा कि हमारा ग्रह इन सभी चीजों से युक्त है और इससे भी अधिक, लेकिन उस विदेशी दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल किया जा सके। खैर, यह " **याहवे एलोहिनु याहवे ईचड** की प्रकृति है; इसका क्या अर्थ है और इसमें क्या-क्या विशेषताएँ शामिल हैं, इसका विश्लेषण करने के लिए इसे एक विशेषता या दूसरी विशेषता के सिद्धांत में बदलकर सरल नहीं किया जा सकता है, और हमारे सीमित 4-आयामी भौतिक दुनिया या सीमित मानव मन में कुछ भी ऐसा नहीं है जिसका उपयोग इस सिद्धांत में निहित विशाल आध्यात्मिक वास्तविकता को दर्शाने के लिए किया जा सके।

कम से कम हम यह तो कह सकते हैं कि इसका मतलब यह है कि प्रभु ईश्वर ही एकमात्र ईश्वर है जो अस्तित्व में है, वह पूजा की एकमात्र वस्तु है जिसे उसके विश्वासियों के लिए अनुमति दी गई है, वह पूरी तरह से एकीकृत है क्योंकि उसके विभिन्न "टुकड़े" नहीं हैं जिन्हें "व्यक्तियों" में अलग किया जा सकता है, और वह इस अर्थ में हमारा ईश्वर है कि उसने अपने और उन सभी के बीच एक पारस्परिक संबंध स्थापित किया है जो प्रेम में उसके प्रति समर्पित हैं। इसके अलावा हम उसका औपचारिक नाम **याहवे** जानते हैं, और हम **शेमा इस्राएल** (हे इस्राएल सुनो) के पहले 2 शब्दों से जानते हैं कि उसके अस्तित्व और प्रकृति का यह कथन इस्राएल को निर्देशित किया गया था और परिभाषा के अनुसार वह सब जो इस्राएल से जुड़ना चाहता था। इस छोटे से कथन में और भी बहुत कुछ है और रब्बियों ने इस पर बहुत विस्तार से विचार किया है, और रब्बियों ने जो निष्कर्ष निकाला है उससे कहीं आगे उन 4 सरल शब्दों में और भी बहुत कुछ है जिसे हमारा सीमित मानव मन इस ब्रह्मांडीय सिद्धांत के बारे में कभी नहीं समझ पाएगा।

लेकिन एक बात पर भी ध्यान दें जो संयोग नहीं हो सकती: विश्वास की यह केंद्रीय स्वीकारोक्ति केवल 4 शब्दों से बनी है, ठीक वैसे ही जैसे **याहवे** का नाम भी केवल 4 अक्षरों से बना है।

चलिए आगे बढ़ते हैं और **शेमा** के दूसरे भाग की शुरुआत को देखते हैं, जो है "तुम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करोगे या अधिक शाब्दिक रूप से, तुम अपने इलोहिम यहोवा से प्रेम करोगे। यहाँ **प्रेम** शब्द की फिर से जाँच करने के लिए एक उत्कृष्ट संदर्भ है क्योंकि यदि कोई यह निर्णय लेता है कि प्रेम मुख्य रूप से एक भावना या मन की स्थिति है तो हम पाते हैं कि यहाँ प्रभु एक भावना (तुम्हें प्रेम करना चाहिए) का आदेश दे रहे हैं। यहाँ समस्या यह है उन सभी चीजों में से जो एक आदमी कर सकता है, एक भावना को जगाना अगर हम वास्तव में इसे महसूस नहीं करते हैं, तो सबसे कठिन काम है (शायद फिल्म अभिनेताओं और हमारे बीच उन लोगों को छोड़कर जो सबसे गहरी संवेदनशीलता रखते हैं)। हम अक्सर बाहरी तौर पर एक भावना की नकल कर सकते हैं, हम दिखावा कर सकते हैं, यहाँ तक कि खुद को सचमुच आँसू में भी ला सकते हैं। लेकिन क्या किसी आदमी को कोई भावना रखने का आदेश दिया जा सकता है? क्या कोई आदमी किसी दूसरे आदमी को एक खास तरह से महसूस करने का आदेश दे सकता है? जब हम बहुत दुखी होते हैं और फिर कोई प्रिय मित्र या पादरी हमें "खुश रहने" के लिए प्रेरित करता है, तो हम क्या करते हैं? मान लीजिए कि एक पति अपनी पत्नी की उदास स्थिति से निपटना नहीं चाहता है और उसे सुझाव देता है कि वह "खुश रहे"। जितना वह चाहती है (भले ही केवल अपने पति को खुश करने के लिए) आमतौर पर वह ऐसा नहीं कर पाती है, लेकिन कुछ लोग इसे दिखावा करने में बहुत अच्छे होते हैं। मुद्दा यह है कि किसी भावना को नियंत्रित करने में शुभकामनाएँ (मेरा विश्वास करें, मैंने कोशिश की है।)। तो क्या परमेश्वर हमें उसके प्रति प्रेम की भावना रखने का आदेश दे रहे हैं?

अब जब किसी भौतिक कार्य को करने का आदेश देने की बात आती है तो यह एक अलग मुद्दा है। परमेश्वर हमें अन्य देवताओं की पूजा न करने का आदेश दे सकते हैं, और निश्चित रूप से हम उसका पालन करने की क्षमता रखते हैं। परमेश्वर हमें भौतिक बाइबल पर्व मनाने का आदेश दे सकते हैं, और हम इसे भौतिक रूप से कर सकते हैं। वास्तव में हम इन बातों पर प्रभु से आंतरिक रूप से असहमत हो सकते हैं, हम उनके बारे में उदासीन भी महसूस कर सकते हैं, और फिर भी आज्ञाओं का पालन कर सकते हैं। हालाँकि परमेश्वर के सच्चे प्यार में शारीरिक क्रिया से कहीं ज्यादा शामिल है। प्यार एक मन की स्थिति के साथ-साथ एक शारीरिक प्रतिक्रिया भी है। वास्तव में मैं कहूँगा कि जिस तरह का प्यार ईश्वरीय है, उसमें हमारी आत्मा की स्थिति भी शामिल है। क्या प्यार में कोई भावनात्मक घटक होता है? निश्चित रूप से होता है। हालाँकि मैं कहूँगा कि प्यार की भावना सभी अन्य कारकों के पहले होने का अंतिम परिणाम होनी चाहिए। लेकिन ईश्वरीय बाइबल प्रेम को बनाने वाले सभी घटकों में से, भावना निश्चित रूप से मुख्य या मार्गदर्शक नहीं है।

क्योंकि सृष्टिकर्ता से हमारे रिश्ते में उससे प्रेम करने से अधिक महत्वपूर्ण कोई पहलू नहीं है, इसलिए मुझे ईश्वर से प्रेम करने की इस **आज्ञा** को देखने का एक और तरीका बताने की अनुमति दें, प्रेम, घृणा के

विपरीत है। अक्सर शास्त्रों में हमें उन चीजों से घृणा करने के लिए कहा जाता है जिनसे ईश्वर घृणा करता है। फिर से, हमारी पश्चिमी मानसिकता के कारण, हम घृणा को उसी तरह देखते हैं जैसे हम प्रेम को देखते हैं..... मुख्य रूप से हमारी भावनाओं से जुड़ा हुआ। वास्तव में जैसा कि रब्बी बारुक ने ईजेकील के अपने अध्ययन में सिखाया, घृणा का बाइबल का अर्थ अंग्रेजी में "अस्वीकार" शब्द के करीब है; या उच्च सार में (विशेष रूप से जब यह ईश्वर के साथ हमारे रिश्ते से संबंधित है), विश्वासघात का प्रदर्शन करना। ईश्वर से घृणा करना, ईश्वर को अस्वीकार करना है और इस प्रकार उनके प्रति विश्वासघात करना है। उनके तोरह से घृणा करना उनके तोरह को अस्वीकार करना और उसके नियमों और आदेशों के प्रति विश्वासघात करना है। इसके विपरीत ईश्वर से प्रेम करना उन्हें स्वीकार करना और वफादारी प्रदर्शित करना है। बेशक केवल स्वीकृति या वफादारी के बाहरी प्रदर्शन से अधिक शामिल है (पूर्ण समर्पण इस स्वीकृति का सर्वोच्च सार है)। फिर भी क्या यह प्रचारक का सामान्य आह्वान नहीं है कि एक गैर-विश्वासी को यीशु मसीह को "स्वीकार" करने की आवश्यकता है? और एक सामान्य अर्थ में ईसाई जानते हैं कि यीशु को "स्वीकार" करने का क्या मतलब है। बाइबल इस प्रकार की स्वीकृति को समर्पण और आज्ञाकारिता के रूप में परिभाषित करती है, जो कि "प्रेम" का प्रमाण है जिसकी प्रभु तलाश कर रहे हैं।

पद 5 के अंतिम आधे भाग में हमें यहोवा के इस प्रेम को "अपने पूरे हृदय, अपनी आत्मा और अपनी शक्ति" से मूर्त रूप देने के लिए कहा गया है। इब्रानी में ये शब्द हैं **लेवव** (हृदय), **नेफेश** (आत्मा), और **बे-खोल मेओडेखा** (शक्ति)। हृदय **लेवव** का बिल्कुल सही अनुवाद है, यह वास्तव में हमारे सीने के अंदर के अंग को संदर्भित करता है जो रक्त पंप करता है। हालाँकि, **लेवव** शब्द का इब्रानी में क्या अर्थ है (क्योंकि यह इस बात पर लागू होता है कि हृदय केवल रक्त पंप करने से परे क्या कार्य करता है) को समझने की समस्या, परमेश्वर के संपूर्ण वचन को पढ़ने के लिए महत्वपूर्ण है। यही वह समय है जब हमें अपने दिल में कुछ संग्रहीत करने या अपने दिल में अपने भाई के लिए घृणा न रखने का निर्देश दिया जाता है, इसका क्या अर्थ है? पश्चिमी संस्कृति (और चर्च में) में हम हृदय को अपनी भावनाओं और अपनी नैतिकता, यहाँ तक कि अपने चरित्र का केंद्र मानते हैं। ऐसा नहीं है कि इब्रानियों ने "हृदय" शब्द का उच्चारण करते समय क्या सोचा या क्या मतलब था, और इसलिए हमें इसे उसी तरह से सोचना सीखना चाहिए जैसा कि उन्होंने इसका मतलब निकाला था। इब्रानियों को हृदय के बारे में बुद्धि और सचेत विचार के आसन के रूप में पता था, हमारी स्मृति का स्थान और जहाँ क्रियाएँ चिंतन की जाती हैं और निर्णय लिए जाते हैं। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ कि मैंने जो कुछ भी आपको बताया वह अनुमान नहीं है। कोई भी सक्षम बाइबल विद्वान इससे सहमत होगा क्योंकि यह अच्छी तरह से प्रलेखित ऐतिहासिक तथ्य है। यह बहुत बाद की तारीख (हेलेनिस्टिक काल से लेकर मध्यकालीन समय तक) में था कि मस्तिष्क का कार्य अंततः वह स्थान माना गया जहाँ बुद्धि और सभी विचार प्रक्रियाएँ निवास करती हैं। इसलिए इस मामले पर यूनानी विचार के अनुरूप भावना, इच्छा और जुनून का कार्य हृदय को हस्तांतरित कर दिया गया। लेकिन हृदय के कार्य की यह पुनर्परिभाषा तब तक नहीं हुई जब तक कि बाइबल को बंद करके पूरा नहीं कर दिया गया।

मुद्दा यह है कि **लेव** या **लेवव** शब्द का अनुवाद "हृदय (हृदय अंग) तकनीकी रूप से सही है, लेकिन यह हमें जो कार्य बताता है, वह वैसा नहीं है जैसा हमें आमतौर पर सिखाया जाता है। चाहे पुराना नियम हो या नया नियम, जब हम बाइबल में "हृदय" शब्द देखते हैं तो हमें बस इसे मिटा देना चाहिए और "मस्तिष्क" या "मन" डाल देना चाहिए।

ठीक है। तो हमने चर्चा की कि "पूरे दिल से" का क्या मतलब है और सीखा कि आधुनिक अंग्रेजी में हमें इसका मतलब "पूरे दिमाग से" लेना चाहिए। इस कथन का दूसरा भाग (**पूरे हृदय से**) इतना सीधा नहीं है क्योंकि इस्तेमाल किया जा रहा इब्रानी शब्द, **नेफेश**, थोड़ा ज़्यादा कठिन है और इसलिए इसका कई तरीकों से अनुवाद किया गया है। ज़्यादातर बार इसका अनुवाद आत्मा के रूप में किया जाता है, अन्य समय में इसका अनुवाद "अस्तित्व" के रूप में किया जाता है (मैंने इसे "सार" के रूप में भी लिखा हुआ देखा है)। इनमें से कोई भी ज़रूरी नहीं कि दूसरे से गलत या बेहतर हो। समस्या **नेफेश** शब्द की अस्पष्ट प्रकृति में है। **नेफेश** अपने साथ कई अर्थ रखता है और मुझे लगता है कि (जैसा कि जब हमने वाक्यांश पर चर्चा की, "यहोवा हमारा ईश्वर है, यहोवा एक है") इसका मतलब यह नहीं है कि कोई एक सर्वोपरि या सही परिभाषा है, बल्कि यह है कि मैं आपको जो कुछ भी बताने जा रहा हूँ (और उससे भी ज़्यादा) वह सब इसके निर्माण में शामिल है। रब्बी कहते हैं कि **नेफेश** में जीवन, हमारा जीवन सार, श्वास, जीवन की रहस्यमयी श्वास शामिल है जिसे ईश्वर ने अपने द्वारा बनाए गए प्राणियों में फूँक कर उन्हें जीवित किया है, आत्मा, वह अद्वितीय गुण जो हमें एक साथ मानव बनाता है और फिर भी ईश्वर की छवि, आत्मा बनाता है, और कभी-कभी यह हमारे गहनतम विचारों को भी संदर्भित कर सकता है।

उस कथन का अंतिम भाग, जिसका अनुवाद आमतौर पर "अपनी पूरी ताकत से" के रूप में किया जाता है, **बे-खोल में ओडेखा** है। यह बाइबल में एक दुर्लभ वाक्यांश है, लेकिन रब्बियों का कहना है कि यह अधिक सामान्य **बि-मी' ओड में 'ओड** के लगभग बराबर है, जिसका अर्थ है "बहुत, बहुत अधिक"। विचार यह है कि हमें ईश्वर से प्रेम करने के लिए अत्यधिक प्रयास और सचेत विचार करना चाहिए (एक बार फिर आधुनिक धारणा से अलग हटकर कि प्रेम मुख्य रूप से एक "भावना" है, भले ही भावना निश्चित रूप से प्रेम का एक वैध, यद्यपि कम, तत्व है), और यह कि उससे प्रेम करना वही है जिसकी प्रभु उससे अपेक्षा करते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि व्यवस्थाविवरण तोरह की पहली पुस्तक है जो वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करने की बात कहती है। पिछली किताबों में भय, श्रद्धा और डर के बारे में बात की गई थी। मैं स्पष्ट कर दूँ इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि मूसा अब कह रहा है कि "भय और श्रद्धा को भूल जाओ और अब ईश्वर से डरना बंद करो, इसके बजाय उसे प्रेम से बदल दो"। बल्कि विचार यह है कि भय और श्रद्धा को प्रेम के संदर्भ में होना चाहिए; या जैसा कि प्रेम की सही बाइबल परिभाषा है, भय और श्रद्धा, प्रभु के प्रति स्वीकृति, वफादारी और समर्पण के संदर्भ में होनी चाहिए।

अब, एक और लंबे समय से चले आ रहे सिद्धांत को चुनौती दिए जाने के लिए तैयार हो जाइए, पद 6 में यह कहा गया है। **व्यवस्थाविवरण 6:6 "और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें।**

परमेश्वर द्वारा दिए गए आदेश "उसके नियम" कहने का एक और तरीका है, है न? और यह पद कहाँ कहती है कि परमेश्वर के ये नियम लिखे जाने चाहिए? हमारे हृदय पर। हे परमेश्वर; मूसा के नियम इस्राएलियों के हृदय पर लिखे जाने चाहिए? मुझे लगा कि यह केवल एक नया नियम है कि तोरह को हमारे हृदय पर लिखा जाना चाहिए। क्या हमें हमेशा यही नहीं सिखाया गया है? क्या यह एक बुनियादी ईसाई सिद्धांत नहीं है कि हमें तोरह को इसलिए त्यागना चाहिए क्योंकि यह एक यांत्रिक कानूनी कोड था, जो ठंडे कठोर पत्थर की पट्टियों पर लिखा गया था, और यह स्वर्ग जाने का एक तरीका था (और इस तरह योग्यता प्राप्त करना)? और यह कि नया नियम मसीहा से नए नियमों और आदेशों की एक अलग प्रणाली पर स्विच करता है, और ये हमारे हृदय पर लिखे गए हैं (पत्थर पर नहीं), और विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा हम स्वर्ग को अपने लिए खोल सकते हैं। आश्चर्यजनक है कि जब हम वास्तव में तोरह को पढ़ते हैं और इसके बारे में केवल धारणाएँ नहीं बनाते हैं, तो क्या सच्चाई सामने आती है। लेकिन नया नियम की तरह ही, इस बात को पहचानें कि आधुनिक अंग्रेजी में इसका मतलब यह है कि तोरह, ईश्वर की आज्ञाएँ (यीशुआ की आज्ञाएँ) हमारे दिमाग में होनी चाहिए। इसलिए उन्हें जाना जा सकता है, उन पर विचार किया जा सकता है, उन पर विचार किया जा सकता है और उन पर अमल किया जा सकता है, न कि उन्हें सिर्फ "महसूस" किया जा सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य देशों के कानून संहिता हमसे अलग हैं, वे बदलते हैं, उनमें और कानून जोड़े जाते हैं, कुछ को पूरी तरह से हटा दिया जाता है। हमारा काम (धर्मनिरपेक्ष समाज में) बस उन पर नज़र रखना है। वास्तव में हम इस समस्या को ज़्यादातर वकीलों को सौंप देते हैं। लेकिन इस धारणा का सार यह है कि ईश्वर के कानून हमारे दिलों (हमारे दिमाग) पर लिखे जाने चाहिए, यह है कि उनके कानून हमारे अस्तित्व और तंतुओं का हिस्सा बनने चाहिए, न कि हमसे अलग कुछ।

चलो आज यहीं रुकें।